तर्ज : जीवन चलने का नाम.....

सन्तो सच का पैगाम, देते रहो सुबह शाम ।
जहाँ ये स्वर्ग बनाना है, प्यार से इसे सजाना है ।
गुलस्तां ये महकाना है ॥ १॥

एक को जाने, एक को माने,एक बनें हम सारे ।
दुनिया में हम ऐसे चमके, ज्यों अंबर में तारें ॥
जहाँ ये स्वर्ग बनाना है, प्यार से इसे सजाना है ।
गुलस्तां ये महकाना है ॥२॥

हिन्दू , मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,सबका मालिक एक।
एक प्रभू है सबका सहारा, एक से है ये अनेक॥
जहाँ ये स्वर्ग बनाना है, प्यार से इसे सजाना है ।
गुलस्तां ये महकाना है ॥३॥

फूल है सारे इक बगिया के, खूशबू न्यारी न्यारी ।
कलाकार ने कला बनाई, एक से एक प्यारी ।
जहाँ ये स्वर्ग बनाना है, प्यार से इसे सजाना है ।
गुलस्तां ये महकाना है ॥४॥

नफरत की दिवार के उपर, प्यार के पुल बनाये ।
“शौक” गुरु की रहमत से, ये पुण्य कर्म कमाये ॥
जहाँ ये स्वर्ग बनाना है, प्यार से इसे सजाना है ।
गुलस्तां ये महकाना है ॥५॥